प्रभात

छिपाएंगे नहीं, छापेंगे

facebook-Subharti Tv Twitter-Subharti Tv

www.subhartimedia.com | लखनऊ, शुक्रवार, 07 जून 2019, मूल्य : 2.00, पृष्ठ : 12 | उत्तर प्रदेश–उत्तराखंड से प्रकाशित

हिमालया सहित चार दवा कंपनियों पर 74 करोड़ का जुर्माना पेज –11

क्रिकेट विश्व कप में आज

आस्ट्रेलिया बनाम वेस्टइंडीज

स्थान : नॉटिंघम

समय : अपराह्न 3 बजे

पर्यावरण असंतुलन व वायू प्रदूषण पर की चर्चा

लखनऊ। प्रभात

गोमती नगर जनकल्याण महासमिति की उपखण्ड विराम–5 व स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट साइन्सेज, लखनऊ के तत्वाधान में 'विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून, 2019) पर एक संगोष्ठी का आयोजन 'बसन्ती पार्क' में किया गया, जिसमें नगर के सम्मानित व्यक्तियों ने अपनी सहभागिता की और पर्यावरण असन्तुलन को रोकने तथा 'वायु प्रदूषण' के विषय में विशेष रूप से चर्चा की तथा अपने–अपने सुझाए दिए।

पर्यावरण दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में बोलते वक्ता

संगोष्ठी के संयोजक डॉ0 भरत राज सिंह, वरिष्ठ पर्यावरणविद् व सलाहकार, जनकल्याण महासमिति; महानिदेशक, स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट साइन्सेज, लखनऊ थे तथा मुख्य अतिथि पूर्व कैबिनेट मंत्री गोरख प्रसाद निषाद तथा अध्यक्ष, जनकल्याण महासमिति व होमियोपैथिक निदेशालय के अध्यक्ष, डा0 बी0एन0 सिंह, अध्यक्ष विराम–5 कल्याण समिति, जी0एन0 सिन्हा व सचिव, आर0एस0मिश्रा, खण्ड प्रभारी, राकेश जेटली, राम दयाल मौर्या व आर0पी0 शुक्ला के अलावा बड़ी संख्या में लोगो ने भाग लिया। बैठक में निम्न सुझाव दिए गये– प्रकृति के साथ बच्चों को जोड़ने व पेड़–पौधों व हरियाली के फायदे से, अभिभावको द्वारा उन्हें अवगत कराया जाय। पर्यावरण बचाने की सतर्कता के लिए वैदिक काल के ग्रन्थों का अध्ययन व अनुसरण किया जाय। वृक्षो के रोपण को अधिक से अधिक कर, उसे जीवित रखने के लिए सम्बन्धित लोगों को जोड़ने का प्रयास किया जाय। नई–सड़कों (एक्सप्रेस वे, राष्ट्रीय मार्गों, राज्यमार्गों के निर्माण के पूर्व, उनके दोनों तरफ छायादार व फलदार वृक्षों को अवश्य लगाया जाये जिससे निर्माण–पूर्ति तक यह उपयोगी भी हो सके। पानी के संरक्षण के लिए पार्कों व खुली जगहों पर यथा सम्भव रिचार्ज की व्यवस्था की जाय। पार्कों तथा वाहनों की खुली–पार्किंग स्थलों पर, अण्डर–ग्राउण्ड–तालाब, जिनकी तलहटी पक्की न हों, बनाए जाये जिससे कालोनी आदि के बारिश के पानी को एकत्रित होकर रिचार्ज की व्यवस्था हो सके और बारिश का पानी सीधे नाली के द्वारा नदी में न पहुँचे। पुराने काव्य–लेखों 'विज्ञान–शकुन्तलम' आदि पर प्रचार किया जाय, जिससे पर्यावरण संरक्षण जीवन का अंग बन सके। पानी का चिड़काव के उपरान्त ही, सड़कों की सफाई, निर्माण कार्य सामग्री आदि का उपयोग किया जाय, जिससे वायु प्रदूषण कम हो। घरों की छतों को सफेद पेन्ट कराया जाय जिससे घर के तापमान में 5–7 डिग्री की कमी आ सके और ऊर्जा की बचत हो। छतों पर 'सौर–ऊर्जा के पैनल अधिक से अधिक लगाकर विद्युत–उपयोग किया जाय तथा देहात में सौर ऊर्जा पम्प लगाए जाए। घर के लान को पक्का न कर यथा सम्भव ग्रीनरी लगाई जाय। उक्त उपायों से यह सम्भव है कि आने वाली सदी में हम आगामी पीढ़ी के बच्चों के लिए धरती को हरा–भरा करके जीवन को खुशहाल करने में कारगर हो सकेंगे।